# गंगा का सफर

## गौमुख से गंगा सागर तक

# गंगा का सफर

# गोमुख से गंगा सागर तक


संध्या जोशी

रुचि बडोला

एस.ए.हुसैन

## गंगा का सफर
2024

## गंगा की स्वच्छता के लिए गंगा नदी के बेसिन में जलीय जीवों के संरक्षण एंव पारिस्थितिकी सेवाओं के रखरखाव के लिए नियोजन एवं प्रबन्धन


### परियोजना अन्वेषक
रुचि बडोला एवं सैयद एनुल हुसैन



© जलीय जीव संरक्षण अनुश्रवण केंद्र, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून



यह पुस्तिका जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के अंतर्गत परियोजना "गंगा की स्वच्छता के लिए गंगा नदी के बेसिन में जलीय जीवों के संरक्षण एंव पारिस्थितिकी सेवाओं के रखरखाव के लिए नियोजन एवं प्रबन्धन" द्वारा निर्गत की गई है।



### लेखिका
संध्या जोशी

### प्रारूप
महेशानन्द पांडे, अमन उनियाल

### इलस्ट्रेशन
अमन उनियाल, ख्याति चौहान, Google



### उद्धरण
डब्लूआइआई जीएसीएमसी (2024)। गंगा का सफर। गंगा एक्वालाइफ कन्जर्वेशन मॉनिटरिंग सेंटर, भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून, भारत। पी.पी 53

### भारतीय वन्यजीव संस्थान,
चन्द्रबनी, देहरादून – 248001,
उत्तराखण्ड, भारत

# गौमुख से गंगा सागर

गंगोत्री
भागीरथी
अलकनन्दा
देवप्रयाग
गंगा
हरिद्वार
कानपुर
इलाहाबाद
वाराणसी
पटना
पदमा
कोलकाता
हुगली

# भूमिका

प्यारे बालगंगा प्रहरी दोस्तों, जैसा कि आपको पता है कि हम गंगा नदी और उसके जलीय जीवों के बारे में आप लोगों से लगातार बात करते रहते हैं। इसी क्रम में आज हम आपको सम्पूर्ण नदी तंत्र के विषय में जानकारी देने जा रहे हैं। इस पुस्तिका के माध्यम से हम आपको गंगा के उद्‌गम से लेकर बंगाल की खाड़ी तक की यात्रा करवायेंगे। इस यात्रा में आपको गंगा के विभिन्न स्वरूपों के दर्शन होंगे। जहां एक ओर आप गंगा के ऐतिहासिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पक्ष से परिचित होंगे वहीं दूसरी ओर आप गंगा के भूगोल इसके पारिस्थितिकी तंत्र तथा जैवविविधता के विषय में भी जान पायेंगे।

गंगा को अनादिकाल से हिंदू धर्म में एक पवित्र नदी का दर्जा दिया गया है जो भारत देश में करोड़ों लोगों की धार्मिक आस्था का प्रतीक है। गंगा दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी नदियों में से एक है। गंगा उत्तराखंड के गंगोत्री ग्लेशियर से निकल कर बंगाल की खाड़ी तक लगभग 2525 कि.मी तक का सफर तय करती है। गंगा नदी को भारत

की जीवन रेखा भी कहा जाता है। भारत की अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक सांस्कृतिक जीवन में इसकी भूमिका को देखते हुए इसे 4 नवम्बर 2008 को राष्ट्रीय नदी का दर्जा दिया गया।

गंगा में लगातार बढ़ रहे मानव हस्तक्षेप के कारण इसकी निर्मलता और अविरलता तो बाधित हो ही रही है, साथ ही प्रदूषण का स्तर भी दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

लगातर बढ़ रहे प्रदूषण के कारण मानव जाति ही नहीं बल्कि गंगा में रहने वाले जीव जन्तु और वनस्पतियां भी प्रभावित हो रही हैं।

अपने जीवन से हम नदियों के महत्व को नकार नहीं सकते। हम सभी किसी ना किसी प्रकार से नदियों से जुड़े हुए हैं। ये जुड़ाव खेती बाड़ी से लेकर हमारे धार्मिक रीति रिवाजों, संस्कृति तथा आजीविका से जुड़े है। लेकिन जनसंख्या के लगातार बढ़ते दबाव के कारण नदी के पर्यावरणीय स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। अब चाहे वो पानी की गुणवत्ता हो या जलीय जीवों की घटती जनसंख्या या उनके आवासीय खतरे हों उन सब कारणों पर भी इस पुस्तक के माध्यम से प्रकाश डालने का प्रयास किया जायेगा। तो चलिए हमारे साथ गंगा की यात्रा का आनंद उठाइये।

संध्या जोशी
रूचि बडोला
एस. ए. हुसैन

# पूराणों में गंगा

गंगा की उत्पत्ति को लेकर हिंदू धर्म में अनेक मान्यताएं प्रचलित हैं। एक मान्यता के अनुसार ब्रह्मा जी के कमंडल में गंगा नाम की युवती जल के रूप में रहती थी। एक अन्य वैष्णव कथा के अनुसार ब्रह्मा ने विष्णु के चरणों को आदर सहित धोया और उस जल को अपने कमंडल में एकत्रित कर लिया। प्रत्येक मान्यता में गंगा के साथ ब्रह्मा जी का उल्लेख अवश्य मिलता है।

गंगा के धरती पर अवतरण की सबसे प्रचलित अनुश्रुति के अनुसार राजा सगर ने अपने साठ हजार पुत्रों के साथ अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए अश्वमेघ यज्ञ करवाया। यज्ञ के पश्चात अश्व को विचरण के लिए छोड दिया गया। आगे–आगे अश्व चलता पीछे–पीछे राजा सगर के 60 हजार पुत्र चलते। जिस–जिस स्थान से अश्व निकलता वो राज्य, राजा सगर की अधीनता स्वीकार करते, और यदि वो इससे इन्कार करते तो उनको राजा सगर के पुत्रों से युद्ध करना पड़ता।

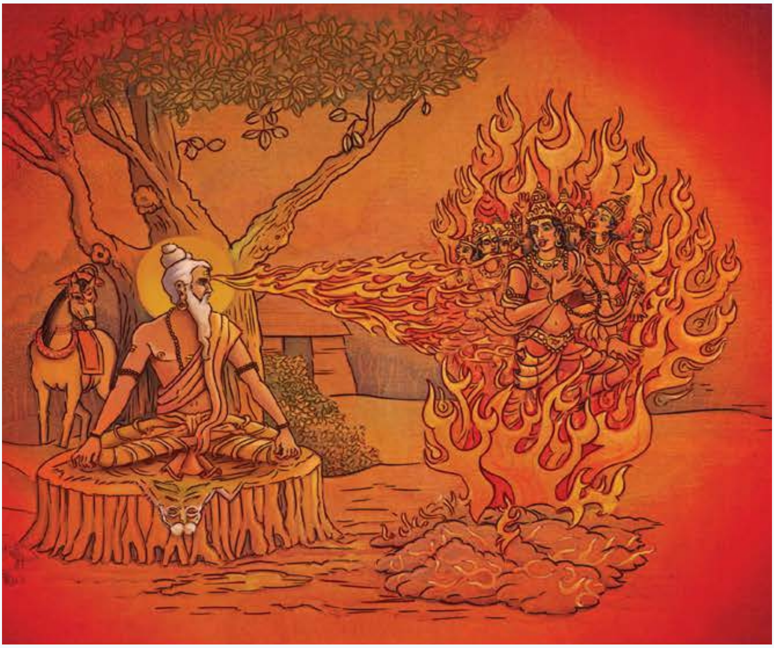

चलते–चलते अश्व कपिल मुनी के आश्रम में पहुंचा कपिल मुनी के शिष्यों ने अश्व को बंधक बना लिया। राजा सगर के पुत्रों ने जब अश्व को बंधक देखा तो उन्होंने कपिल मुनी के शिष्यों को युद्ध के लिए ललकारा। कपिल मुनी उस वक्त तपस्या में लीन थे। राजा सगर के पुत्रों की ललकार से उनकी तपस्या में विघ्न पड़ गया, मुनी ने क्रोध में आकर राजा सगर के साठ हजार पुत्रों को अग्नि से भस्म कर दिया।

राजा सगर ने मुनी से अपने पुत्रों की मुक्ति के लिए प्रार्थना की। मुनी ने कहा कि जब गंगा का पृथ्वी पर अवतरण होगा तभी उनके पुत्रों की मुक्ति सम्भव है। राजा सगर के पौत्र राजा दिलीप के पुत्र राजा भगीरथ ने गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिए घोर तपस्या की। गंगा ब्रह्मा जी के कमंडल में रहती थी। ब्रह्मा जी भगीरथ की तपस्या से प्रसन्न हो कर गंगा को कमंडल से छोड़ने को राजी हो गये। लेकिन गंगा के प्रचंड वेग से पृथ्वी पर प्रलय आने का खतरा देखते हुए उन्होंने भगीरथ से भगवान शिव की तपस्या करने को कहा।

भगीरथ ने एक पैर पर खड़े रह कर कई वर्षों तक कठोर तपस्या की। भगवान शिव ने प्रसन्न हो कर गंगा के वेग को अपनी जटा में सम्भालना स्वीकार कर लिया। ब्रह्मा ने अपने कमंडल से जब गंगा को छोड़ा तो गंगा अपने पूरे वेग से पृथ्वी की ओर चली। गंगा के इस प्रचंड रूप से चारों दिशाएं कांप उठीं। भगवान शिव ने गंगा के इस वेग को थामने के लिए अपनी जटाएं खोल दीं शिव की जटाओं में समा कर कर गंगा शांत हो गई और तीन धाराओं के रूप में बह निकली। आगे–आगे भगीरथ चलते पीछे–पीछे गंगा। भगीरथ के प्रयास से गंगा इस धरती पर आई इसी लिए उसका नाम भगीरथी पड़ा। गंगा के पृथ्वी पर अवतरण से भगीरथ के पुरखों को मोक्ष मिला। गंगा का एक नाम जान्हवी भी है। एक अनुश्रुति के अनुसार गंगा जब पृथ्वी पर उतरी तो उसके वेग की हलचल से जाहनु ऋषि की साधना में व्यवधान पड़ा और गंगा के तेज बहाव में उनके खेत बह गये। ऋषि ने क्रोध में आकर गंगा का पूरा पानी पी लिया। भगीरथ ने ऋषि से प्रार्थना कि वो गंगा को मुक्त कर दें और गंगा को अपना कार्य करने दें। गंगा जाहनू ऋषि के कान से बह निकली और जाह्न्वी कहलाई।

महाभारत में गंगा का उल्लेख राजा शांतनु की पत्नि के रूप में मिलता है। महाभारत के अनुसार मुनी वशिष्ठ द्वारा शापित वसुओं ने मां गंगा से प्रार्थना की, कि वो उनकी जननि बनना स्वीकार करें। वसुओं को श्राप से मुक्त करने के लिए गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुई जिन्हें राजा शांतनु ने शिकार खेलते समय नदी के किनारे एक युवती के रूप में देखा जो बेहद खूबसूरत थी, उसके शरीर से मछली के समान गंध आ रही थी उसे पुराणों में मत्स्यगंधा के नाम से जाना गया। शांतनु ने युवती के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा। युवती ने प्रस्ताव तो स्वीकार किया किंतु एक शर्त रखी कि शांतनु उसे किसी भी कार्य को करने से रोकेंगे नहीं यदि रोकेंगे तो वो उनको छोड़ कर चली जायेगी। शांतनु मान गये और उन दोनों का विवाह हो गया।

जब उन दोनों की पहली संतान हुई तो मत्स्यगंधा ने उसे जा कर नदी में बहा दिया शांतनु शपथ के कारण कुछ नहीं बोल पाये। एक–एक कर मत्स्यगंधा ने अपनी सात संतानों को नदी के प्रवाह में

बहा दिया इस तरह से सात वसुओं को श्राप से मुक्ति मिल गई। आठवें पुत्र के जन्म के समय राजा शांतनु स्वयं को रोक नहीं पाये और उन्होंने मत्स्य गंधा को ऐसा करने से रोका। मत्स्य गंधा ने कहा कि शांतनु अपने वचन का पालन नहीं कर पाये अतः अब उसे जाना होगा। यह कह कर गंगा स्वर्ग चली गई लेकिन जाते–जाते राजा को वचन दिया कि इस बालक का लालन पालन कर वो इसे राजा को सौंप देंगी। आगे चल कर उनका यही पुत्र भीष्म के नाम से प्रसिद्ध हुआ। भीष्म का एक नाम गांगेय भी है। यानी गंगा का पुत्र।

गंगा केवल एक नदी ही नहीं है वरन् भारतीय संस्कृति की वाहक भी है। देवनदी, जाहन्वी, विष्णु पगा, त्रिपथगा यानी तीनों लोकों स्वर्ग, भूलोक, पाताल लोक में बहने वाली गंगा के 108 नाम हैं। यह एक ऐसी नदी है जिसका उल्लेख ऋगवेद से लेकर वर्तमान साहित्य तक मिलता है। गंगा भारत की सबसे प्रसिद्ध एवं पवित्र नदी मानी जाती है। ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की दशमी को गंगा दशहरा पर्व मनाया जाता है, इस दिन गंगा का अवतरण धरती पर हुआ था।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार देवताओं और असुरों के बीच हुआ समुद्र मंथन भी गंगा में ही हुआ था। मंथन में निकले कुम्भ में से अमृत की दो बूंदे पृथ्वी पर दो जगह पर गिरीं। प्रयाग राज और हरिद्वार। जहां आज भी प्रत्येक 12 साल में कुम्भ का मेला लगता है।

## भारत के इतिहास में गंगा का महत्व

गंगा की घाटी में एक ऐसी सभ्यता का उद्‌भव और विकास हुआ जिसका प्राचीन इतिहास अत्यंत गौरवमयी और वैभवशाली है। जहां ज्ञान धर्म अध्यात्म, सभ्यता और संस्कृति की ऐसी किरण प्रस्फुटित हुई जिससे न केवल भारत वरन समस्त संसार आलोकित हुआ। पाषाण या प्रस्तर युग का जन्म यहां होने के अनेकों साक्ष्य यहां मिले हैं। इसी घाटी में रामायण और महाभारत कालीन युग का उद्‌भव और विलय हुआ। इन ग्रंथों में वैदिक कालीन गंगा घाटी की जानकारी मिलती है। प्राचीन मगध महाजनपद का उद्‌भव गंगा घाटी में ही हुआ यहीं से गणराज्यों की परम्परा सम्पूर्ण विश्व में पहली बार प्रारम्भ हुई। यहीं से भारत का वह स्वर्ण युग विकसित हुआ जब मौर्य और गुप्त वंशीय शासकों ने यहां शासन किया।

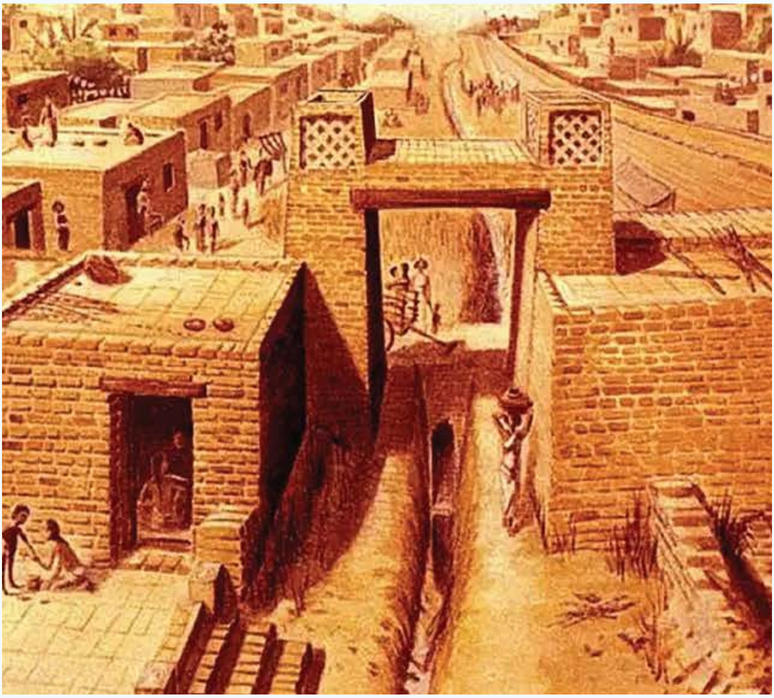

उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग को खनन के दौरान गंगा घाटी की सभ्यता का कालक्रम मिला इसे फ्लोरिडा जांच के लिए भेजा गया जिससे इसका कालक्रम ईसा से 1945 वर्ष पूर्व का मिलता है। इसे गंगा घाटी की सभ्यता का नाम दिया गया। इस अध्ययन से यह साबित हुआ कि हड़प्पा युगीन मानव के जीन स्तेपी या प्राचीन ईरान के लोगों के जीन से मेल नहीं खाते। इस प्रोजैक्ट के प्रमुख वसंत शिंदे का मानना है कि हड़प्पा युगीन मानव का विस्थापन पूरब से पश्चिम की ओर हुआ था ना कि पश्चिम से पूरब की ओर। उनका मानना है कि सिंधु घाटी का मानव ही आखेट से खेती बाड़ी की ओर बढ़ा और उसी ने नगरीय सभ्यता का निर्माण किया। यहां पर मिले पुरावशेषों के आधार पर (ASI) का मानना है कि हड़प्पा और गंगा घाटी के लोगों के बीच व्यापारिक और सांस्कृतिक सम्बंध भी थे।

मौर्य साम्राज्य को भारत का पहला महान साम्राज्य माना जाता है। मौर्य साम्राज्य की स्थापना ईसा से 322 से 185 वर्ष पूर्व हुई थी। मौर्य साम्राज्य ने भारत में लगभग 135 वर्ष तक राज्य किया। यह साम्राज्य पूर्व में मगध राज्य में गंगा नदी के मैदानों से शुरू हुआ। जो कि आज के बंगाल और बिहार राज्य में आता है। इसका प्रारम्भ नदियों की घाटियों से हुआ था जो बाद में पूरे भारत वर्ष में फैल गया था।

मैगस्थनीज सैल्यूकस निकेटर का राजदूत था जो चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में 304 से 299 ईसा पू.के बीच रहा होगा। इस समय इसने इंडिका नामक ग्रंथ की रचना की। मैगस्थनीज ने भारत की भौगोलिक स्थिति एवं उर्वरता का, तथा गंगा एवं सिंधु नदी का उल्लेख किया है। उसने भारत में लगभग 58 नदियों का जिक्र किया है। उसने अपनी पुस्तक में चन्द्रगुप्त मौर्य की राजधानी पाटलीपुत्र का विस्तृत वर्णन किया है। उस काल में पाटलीपुत्र, गंगा तथा सोन नदी के तट पर बसा भारत का सबसे बड़ा नगर था। अशोक महान के समय में मौर्य साम्राज्य हिन्दुकुश की श्रेणियों से लेकर दक्षिण में गोदावरी के दक्षिण तथा मैसूर तक तथा पूर्व मे बंगाल से लेकर पश्चिम में अफगानिस्तान तक था।

शुंग वंश भारत का सबसे प्राचीन ब्राहमण राजवंश रहा है जिसने मौर्य वंश के बाद भारत पर राज किया इनका शासन काल ईसा से 117 वर्ष से 73 ईसा पूर्व तक करीब 112 साल का रहा। पुष्यमित्र शुंग इसका पहला राजा था। इस राज्य में मध्य गंगा एवं चम्बल नदी का प्रदेश सम्मिलित था। पाटलीपुत्र, अयोध्या तथा विदिशा आदि इसके महत्वपूर्ण नगर थे। अजातशत्रु ने अपने पिता बिम्बसार की हत्या कर शासन पर अधिकार कर लिया और इन सभी क्षेत्रों की मांग की। उसके दोनों सौतेले भाई अपने नाना चेटक के पास भाग गये। उसने उनके नाना चेटक से दोनों को सौंपने को कहा जिसे चेटक ने अस्वीकार कर दिया। अजातशत्रु ने चेटक के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। उपरोक्त दोनों कारणों में से पहला कारण अधिक तर्कसंगत लगता है सम्भवतयः मगध और वज्जिसंघ के बीच संघर्ष गंगा पर नियंत्रण स्थापित करने को लेकर हुआ था क्योंकि गंगा नदी पूर्वी उत्तर भारत में व्यापार का प्रमुख माध्यम थी।

अजातशत्रु के काल में मगध का गंगा नदी के दोनों तट पर नियंत्रण हो गया था। यहां से कई व्यापारिक मार्ग होकर जाते थे।

अजात शत्रु का पुत्र उदयिन अपने पिता की हत्या कर राजा बना और अपनी राजधानी राजगृह से गंगा तथा सोन के संगम पर पाटलीपुत्र आज के पटना में स्थापित की। चीनी यात्री फाहयान लिखते हैं कि गुप्त काल में जल और थल दोनों मार्ग से व्यापार होता था। नौकाओं द्वारा गोदावरी, कृष्णा, तथा ब्रहमपुत्र नदी से व्यापार होता था। नदियों द्वारा व्यापार सुगम और सस्ता था। गुप्तकाल में अंतर्राज्यीय तथा अंतर्प्रांतीय व्यापार को अत्यधिक प्रोत्साहन मिला। गंगा, ब्रह्म्पुत्र, गोदावरी, नर्मदा, कृष्णा तथा कावेरी नदियां निर्बाध व्यापार के लिए बहुत मददगार थीं। ताम्रलिप्ति आधुनिक तामलिक बंगाल का एक प्रमुख बंदरगाह था जिससे चीन, सीलोन, जावा और सुमात्रा के साथ व्यापक व्यापार किया जाता था। इस काल में पानी के जहाजों का निर्माण किया गया।

गंगा यमुना और सरस्वती नदियों को मानवाकृति में प्रदर्शित करने की परंपरा गुप्तकाल में ही फली फूली। आरम्भ में मकर वाहिनी गंगा की मूर्ति बनाई जाती थी, मूर्ति की विशेषता ये रहती थी कि गंगा एक हाथ से फलयुक्त आम्र वृक्ष की डाली पकड़े और एक हाथ से घट को थामे प्रदर्शित की जाती थी

कालांतर में भवन या मंदिरों के दोनों द्वारों पर मकर वाहिनी गंगा और कूर्म वाहिनी यमुना अंकित की जाने लगी। वस्तुतः आरम्भ से ही नदियों को देवी के रूप में प्रदर्शित करने की परंपरा रही है किंतु चंदेल राजाओं के काल में मंदिरों में प्रमुखता से नदियों के देवी रूप प्रदर्शित किया गया। अजंता की गुफाएं इसका उदाहरण हैं।

गुप्त साम्राज्य की समाप्ति के साथ मगध व पाटलीपुत्र ने भी अपना महत्व खो दिया था। गुप्त काल 750 ईसा0 पू0 से सल्तनत काल 1206 तक जब कि मुस्लिम साम्राज्य की नींव पड़ी तब तक लगभग 5 मुख्य साम्राज्यों ने भारत पर शासन किया। जिनमें अंतिम शासक चोल थे जिन्होंने लगभग 300 साल तक राज किया और अपनी शक्ति को दक्षिण पूर्वी एशिया तक बढ़ाया। चोल साम्राज्य की सबसे अधिक शक्तिशाली सेना जल सेना थी। चोल सेनाओं ने गंगा नदी को पार कर दो स्थानीय राजाओं को हरा कर अपने साम्राज्य में विलीन कर लिया और इस विजय की उपलब्धि में "गंगईकोंडचोल" यानी "गंगा के विजेता चोल" की उपाधि धारण की। अपनी राजधानी का नाम "गंगईकोंड चोल पुरम्" रखा। इससे पता चलता है कि गंगा कितनी महत्वपूर्ण नदी थी। चोलों के काल में सिंचाई व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया गया जिसमें कि नदियों के पानी तथा तालाबों का उपयोग किया गया। कावेरी नदी जिसका चोलों की संस्कृति में विशेष स्थान है, को पोन्नी (स्वर्ण) नदी के रूप में भी जाना जाता है। नदी के किनारे पर होने वाला वार्षिक उत्सव आदिपेरूक्कू का आरम्भ चोल साम्राज्य के समय से ही आरम्भ हुआ। आदि पेरूक्कू कावेरी के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए मनाया जाता है क्यों कि कावेरी के कारण ही इस इलाके में समृद्धि आई।

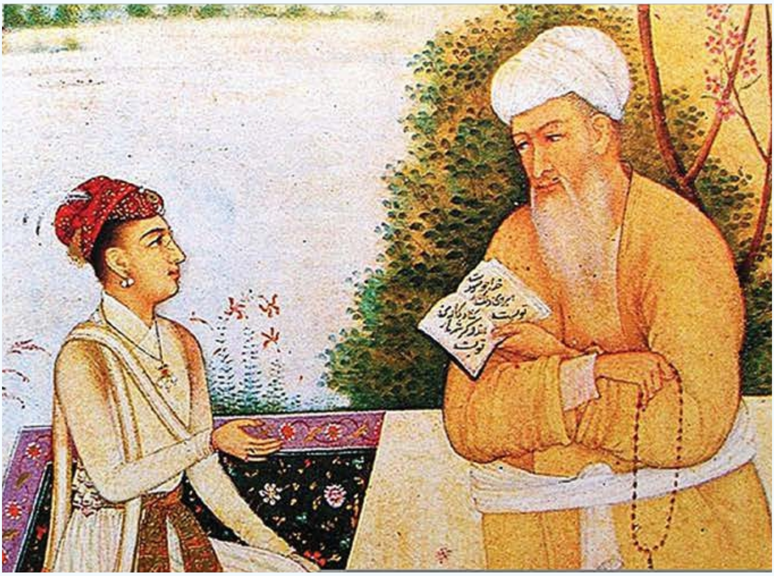

मौर्य, गुप्त और गुप्तोत्त्र काल ही नहीं वरन् सल्तनत काल में भी भारत के इतिहास में नदियां नगरों की बसावट, राज्यों की सीमाओं तथा संसाधनों के आधीपत्य की होड़ में महत्वपूर्ण रहीं। 1190 में मुल्तान, सिंध और पंजाब को अपने अधीन करने के बाद मोहम्मद गोरी ने गंगा के दोआब क्षेत्र में अपने प्रवेश का रास्ता साफ कर लिया। इब्नबतूता एक मोरक्को से आया यात्री था जो कि 1333 में भारत आया और 1369 तक रहा, वह अपनी पुस्तक रहला मोहम्मद बिन तुगलक में लिखता है कि सुल्तान के उपयोग के लिए गंगा का पानी डाक द्वारा राजधानी दौलताबाद भेजा जाता था जिसे पहुंचाने में चालीस दिन का समय लगता था। अफीक के अनुसार सन 1359–1360 में फिरोजशाह तुगलक ने गोमती के किनारे जौनपुर नगर की स्थापना की। यह शहर एक समय में सत्ता का मजबूत केन्द्र बन गया था और शीघ्र ही इसका विकास कुछ समय के लिए दिल्ली के समानान्तर प्रतिभागी नगर के रूप में हुआ। तेरहवीं सदी में अमीर खुसरो ने जो कि गयासुद्दीन तुगलक के दरबार में थे, अपनी पुस्तक तुगलकनामा में अवध की जलवायु, वनस्पतियों, जीव जन्तुओं, आम सरयु/घाघरा की सुन्दरता, वहां के विनम्र नागरिकों की प्रशंसा की है।

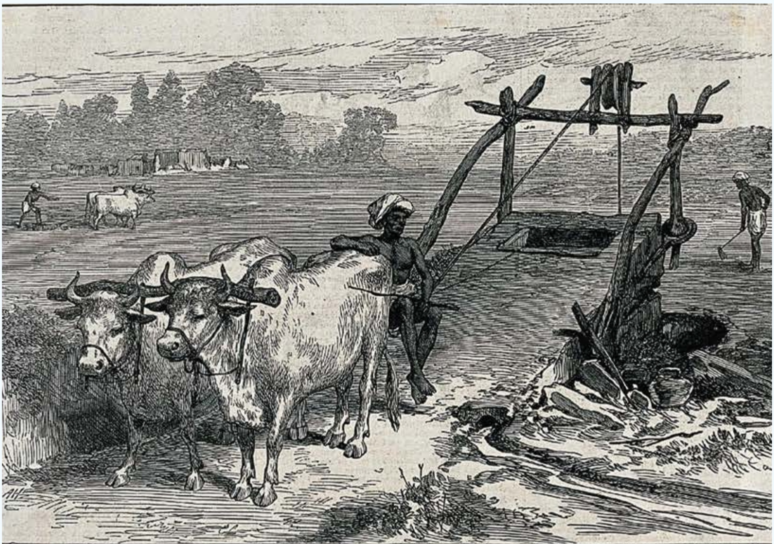

THE FAMINE IN BENGAL: INDIAN MODE OF IRRIGATION.

सल्तनत काल में नहरों से सिंचाई को विशेष प्रोत्साहन दिया गया। गयासुद्दीन तुगलक के शासन काल 1320 से 1325 तक सिंचाई के लिए अनेक नहरों का निर्माण किया गया। किंतु फिरोज शाह तुगलक ने नहरों का सबसे बड़ा जाल बिछाया। जिनमें सतलुज से घग्गर, नांदवी और सिमुर की पहाड़ियों से होकर अरासानी तक, यमुना से फिरोजाबाद तक की नहरें प्रमुख हैं। दिल्ली सल्तनत से नहर निर्माण परम्परा को मुगलों ने भी जारी रखा। शाहजहां के शासनकाल में एक बड़े क्षेत्र की सिंचाई की आपूर्ति के लिए यमुना से "नहर ए फैज" या "नहर ए बहिस्त" यानी स्वर्ग की नहर का निर्माण किया गया जिसकी लम्बाई 150 कि. मी के लगभग थी, जो कि तराई क्षेत्र को सिंचित करते हुए पहले दक्षिण पश्चिम फिर दक्षिण पूर्व में बहते हुए दिल्ली के निकट अपनी मूल नदी से मिल जाती थी। एक अन्य नहर जिसकी लम्बाई 100 मील से कम थी रावी से निकलती थी तथा लाहौर के निकट पुनः उसी में मिल जाती थी। इसका निर्माण शाहजहां के आदेश पर अली मर्दान खां द्वारा करवाया गया था। एक लाख रूपये के व्यय से बनी इस नहर से कृषि का अधिक विकास हुआ।

शाहजहां के शासनकाल में ही पंजाब में रावी नदी से निकाली गई "शाह नहर" के अतिरिक्त तीन अन्य नहरों की जानकारी मिलती है। जिन्हें सत्रहवीं शताब्दी के स्थानीय इतिहासकारों ने कृषि की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी बताया है।

पेयजल के लिए नदियों के विशेष कर गंगा के पानी के उपयोग के साक्ष्य भी इतिहास में मिलते हैं। गंगा जल की पवित्रता के कारण सुदूरवर्ती क्षेत्रों में भी प्राचीन भारत के राजाओं से लेकर मध्ययुगीन शासकों के द्वारा गंगा का पानी पीने के लिए उपयोग में लाया जाता था।

जिसके लिए तेज घुड़सवार नियुक्त थे जो राजाओं के लिए नियमित जल की आपूर्ति किया करते थे। आइने अकबरी में अबुलफजल लिखते हैं कि अकबर अपने पीने के लिए गंगा जल का ही उपयोग किया करता था।

उत्तर पूर्व भारत में कई छोटी–बड़ी नदियां हैं जो जल परिवहन के लिए उपयोग में लाई जाती हैं। प्राचीन काल से लेकर सड़क मार्ग बनने तक ब्रह्मपुत्र एवं बराक नदियों को सामान्यतः माल एवं यात्रियों के परिवहन के लिए उपयोग में लाया जाता था। ब्रिटिश काल के दौरान ब्रह्मपुत्र, बराक, सूरमा, कुशियारा तथा मेघना नदी प्रणालियों का बड़े पैमाने पर उत्तर पूर्व भारत और कोलकाता बंदरगाह के बीच परिवहन और व्यापार के लिए उपयोग किया जाता था। ये नदियां चाय उद्योग वृद्धि के साथ–साथ व्यापार की महत्वपूर्ण वाहक बन गईं।

ब्रिटिश काल में परिवहन के अतिरिक्त नदियों के पानी की क्षमता का उपयोग जल विद्युत परियोजनाओं के लिए किया गया। इस क्रम में सबसे पहले जल विद्युत परियोजना का निर्माण 1902 में कावेरी नदी पर किया गया। इस परियोजना के तहत 1899 में मैसूर राज्य ने बिजली उत्पादन के लिए अपने प्राकृतिक जलप्रपात का उपयोग करने का निर्णय लिया, जिसमें डोनाल्ड रॉबर्टसन ने गंगा नदी पर प्रथम जल विद्युत परियोजना, 700 मेगावाट की क्षमता वाले पहले विद्युतगृह की शुरूआत की।

# गंगा का भूगोल

गंगा नदी दुनिया की तीसरी सबसे लम्बी नदी है जो कि उत्तराखंड से निकल कर बंगाल की खाड़ी तक लगभग 2525 कि0मी का सफर तय करती है। गंगा का उद्‌गम उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में गोमुख नामक ग्लेशियर से है यहां अनेक पर्वतों से निकलने वाली छोटी बड़ी जलधारायें मिलकर इसे एक नदी का रूप देती हैं यहां इसे भागीरथी के नाम से जाना गया है। उत्तरकाशी जिले से आगे बढ़ते हुए टिहरी जिले में भागीरथी का संगम अपनी सहायक नदी भिलंगना से होता है। टिहरी से देवप्रयाग पहुंचने पर भागीरथी, बद्रीनाथ से आने वाली अलकनंदा, जो कि अपने साथ अपनी मुख्य सहायक नदियों मंदाकिनी नंदाकिनी और धौली गंगा का पवित्र पानी साथ लेकर आती है, के साथ संगम करती है और देवप्रयाग से गंगा बन जाती है। उत्तराखंड में लगभग 200 कि0मी के संकरे रास्तों से बहने के उपरांत गंगा ऋषिकेश के बाद मैदानी भाग में प्रवेश करती है।

पर्वतीय क्षेत्रों में जहां गगा का बहाव तेज होता है वहीं मैदान में उतरते ही गंगा का विस्तार बढ़ जाता है और बहाव में तेजी कम हो जाती है। ऋषिकेश से 28 कि.मी की दूरी पर हरिद्वार स्थित है। अपनी सहायक नदियों और भारी वर्षा वाले मैदानों के कारण मैदानी क्षेत्र में गंगा में पानी की मात्रा में मौसमी बदलाव देखने को मिलते हैं। जहां एक ओर अप्रैल से जून तक पिघलती हिमालयी बर्फ नदियों को पोषण देती है और मानसून में होने वाली भारी वर्षा बाढ़ का कारण बनती है, वहीं शीतकाल में नदियों का पानी कम हो जाता है। देश की सबसे महत्वपूर्ण नदियों में से एक गंगा नदी भारत के सबसे अधिक उपजाऊ और घनी आबादी वाले क्षेत्रों से होकर बहती है। गंगा अपनी सहायक नदियों के साथ 10 लाख वर्ग कि.मी क्षेत्रफल के अति उपजाऊ मैदान की संरचना करती है।

हरिद्वार से लगभग 800 कि.मी की मैदानी यात्रा में गंगा उत्तर प्रदेश के गढ़मुक्तेश्वर, सोरों, फर्रूखाबाद, कन्नौज, बिठूर, कानपुर होते हुए इलाहाबाद (प्रयागराज) पहुंचती है यह गंगा यमुना और सरस्वती नदियों का संगम स्थल है, जिसके कारण इसे तीर्थराज भी कहा गया है। यहां से गंगा पौराणिक नगरी काशी (बनारस) में वक्र लेती है, और उत्तर वाहिनी कहलाती है। यहां से मिर्जापुर, पटना, भागलपुर साहिबगंज होते हुए पाकुर पहुंचती है। इस बीच इसमें इसकी बहुत सी सहायक नदियां सोन, गंडक, घाघरा कोसी आदि मिलती हैं, साहिबगंज में राजमहल की पहाड़ियों से यह दक्षिणावर्ती हो जाती है। पश्चिम बंगाल में प्रवेश करने के बाद गिरिया नामक स्थान से गंगा दो शाखाओं में बंट जाती है जिनका नाम यहां से भगीरथी और पद्मा हो जाता है।

भगीरथी गिरिया से दक्षिण की ओर बहने लगती है जबकि, पद्मा दक्षिण पूर्व की ओर बहते हुए फरक्का बैराज से बांग्लादेश में प्रवेश करती है। यहां से गंगा का डेल्टाई भाग शुरू हो जाता है। मुर्शिदाबाद से हुगली शहर तक गंगा का नाम भगीरथी तथा हुगली शहर से मुहाने तक इसे हुगली नदी के नाम से जाना जाता है।

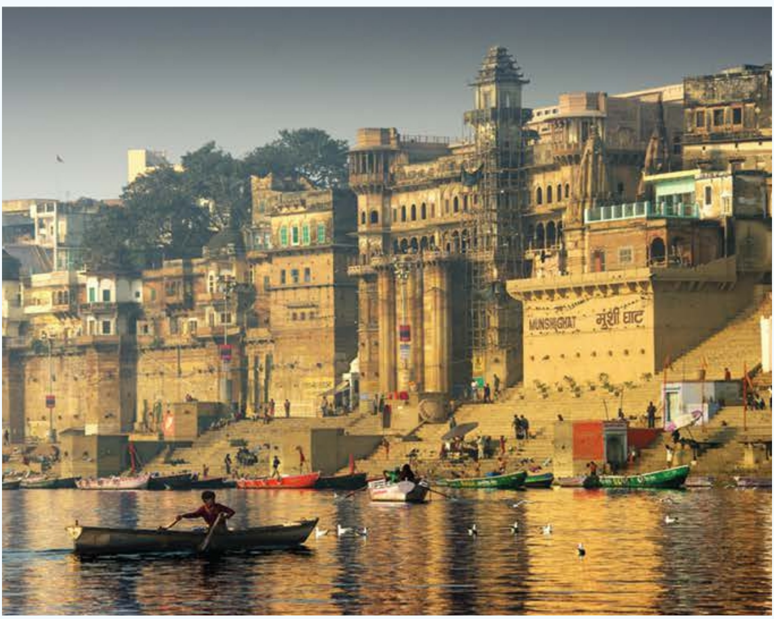

# सुन्दर वन डेल्टा

हुगली नदी कोलकता हावड़ा होते हुए सुन्दरवन के भारतीय भाग में सागर से संगम करती है। पद्मा नदी में ब्रहमपुत्र से निकली शाखा जमुना तथा मेघना मिलती हैं अंततः ये 350 कि.मी चौड़े सुन्दरवन डेल्टा से होते हुए बंगाल की खाड़ी में सागर से संगम करती है जिसे गंगा सागर संगम कहते हैं। सुन्दरबन डेल्टा, गंगा एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा लाई गई जलोढ़ से निर्मित है। सुन्दरबन को 1987 में यूनेस्को ने विश्व धरोहर घोषित किया और 1989 में इसे बायोस्फियर रिजर्व घोषित किया गया। सुन्दरबन 10,000 वर्ग किलोमीटर में फैला है जिसका 60 प्रतिशत वर्ग किलोमीटर का हिस्सा बांग्लादेश तथा 40 प्रतिशत किलोमीटर का हिस्सा भारत में आता है। इसका 30 प्रतिशत हिस्सा पानी/दलदल से युक्त है। सुन्दरवन डेल्टा बंगाल बेसिन से जुड़ा विश्व का सबसे बड़ा और सक्रिय डेल्टा है जिसके कारण यहां वन्यजीवों एवं वनस्पतियों में

विविधतायें पाई जाती है यहां पाई जाने वाली वनस्पतियों में कुछ ऐसी हैं जो दुनिया में केवल यहीं पाई जाती हैं। जिनमें सुंदरी, केवड़ा, आमलोपी, देवा, तर्मजा और गोरान प्रमुख हैं ये वृक्ष/वनस्पतियां केवल खारे एवं मीठे पानी के मिश्रण में उगती हैं।

सुन्दरबन की दलदली जमीन में उगे मौंग्रोव के जंगल रॉयल बंगाल टाइगर के घर माने जाते हैं। यहाँ छोटे बड़े 54 द्वीपों का समूह है। यहां पक्षियों, सरीसृप और अकशेरू की प्रजाति के जीव जन्तु भी निवास करते हैं। इसमें खारे पानी के मगर भी शामिल हैं।

साथ ही यह जल मुर्गी, चित्तीदार हिरण, विशाल छिपकली आदि जैसे कई अन्य पशुओं का प्राकृतिक आवास है। प्रवासी पक्षी साइबेरियाइ बत्तख अपने प्रवास काल के दौरान यहां आते हैं। सुन्दरबन विलुप्तप्रायः प्रजातियों जैसे बाटागुर बास्का, किंग क्रेब, और ऑलिव रिडल कछुए का भी निवास स्थान है।

# गंगा की सहायक

गंगा नदी तंत्र सबसे बड़ा नदी तंत्र है। गंगा नदी दो देशों भारत और बांग्लादेश से होकर बहती है। उत्तराखंड में दो नदियों अलकनंदा तथा भागीरथी की संयुक्त धारायें गंगा नदी का निर्माण करती हैं। बद्रीनाथ के सतोपंथ ग्लेशियर से निकलने वाली विष्णुगंगा तथा धौली गंगा मिलकर अलकनंदा का निर्माण करती हैं। नंद प्रयाग में नंदाघुंघुटी से निकलने वाली नंदाकिनी अलकनंदा से आकर मिलती है। कर्णप्रयाग में पिंडारी ग्लेशियर से निकलने वाली नदी पिंडर तथा रुद्रप्रयाग में केदारनाथ से के चोराबाड़ी ग्लेशियर से निकलने वाली मंदाकिनी अलकनंदा के साथ संगम करती है। टिहरी में भगीरथी, जो कि उत्तरकाशी के गंगोत्री ग्लेशियर से निकलती है, तथा टिहरी में खतलिंग ग्लेशियर से निकलने वाली भिलंगना संगम करती हैं। देवप्रयाग में भगीरथी और अलकनंदा का संगम होता है और यहीं से नदी गंगा कहलाती है। हरि्द्वार से गंगा मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करती है।

गंगा में उत्तर की ओर से आकर मिलने वाली प्रमुख सहायक नदियां यमुना, रामगंगा, करनाली (घाघरा), ताप्ती, गंडक, कोसी तथा काक्षी हैं। दक्षिणी पठार से आ कर मिलने वाली प्रमुख नदियों में चम्बल, सोन, बेतवा, केन तथा टौंस आदि हैं। यमुना गंगा की सबसे प्रमुख सहायक नदी है जो हिमालय की बंदरपुंछ चोटी के आधार पर यमुनोत्री हिमखंड से निकलती है। हिमालय के ऊपरी क्षेत्र में इसमें टौंस तथा तराई वाले क्षेत्र में इसमें लघु हिमालय से आने वाली गिरी तथा आसन नदियां मिलती हैं। चम्बल नदी इटावा के पास यमुना से मिलती हैं। प्रयागराज में गंगा और यमुना का संगम होता है। राम गंगा का उद्‌गम हिमालय में गैरसैण के निकट दूधातोली के जंगलों से होता है जो कि नैनीताल में कालागढ़, कालागढ़ से उत्तर प्रदेश के बिजनौर, मुरादाबाद बरेली जिलों से होती हुई कन्नौज में गंगा में समाहित हो जाती है। करनाली (घाघरा) तिब्बती पठार के मंचू ग्लेशियर से निकलती है और अयोध्या, बलिया की सीमा पर गंगा से मिल जाती हैं इसे सरयू के नाम से भी जाना जाता है।

गंडक हिमालय से निकल कर नेपाल में शालिग्राम या गंडकी के नाम से बहती है। मैदानी भाग में इसे नारायणी के नाम से जाना जाता है जो कि त्रिशूल तथा काली का जल अपने साथ लेकर सोनपुर हाजीपुर (बिहार) के पास गंगा से संगम करती है। अरूण नदी कोसी की मुख्य धारा है जो कि ब्रहमपुत्र के बेसिन में सर्पाकार बहते हुए यारू नाम की नदी से मिलती है। जो कि शिवालिक पार करके मैदान में बिहार राज्य में गंगा मे मिल जाती है। सोन नदी अमरकंटक की पहाड़ियों से निकल कर पटना में गंगा में मिल जाती है।

(हल्दी–छपरा) पश्चिमी बंगाल में नदी दो भागों में बंट जाती है। मुख्य नदी भगीरथी जिसे पश्चिमी बंगाल में गंगा को भगीरथी भी कहते हैं, बांग्लादेश में प्रवेश कर जाती है। हुगली नदी पश्चिम बंगाल में दक्षिण की ओर बहते हुए बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। कोलकता हुगली नदी के तट पर ही स्थित है। मणीपुर से निकलने वाली बराक नदी तथा मेघना ब्रहमपुत्र तथा गंगा की संयुक्त धारा को बांग्लादेश में पद्मा के नाम से जाना जाता है।

# साहित्य में गंगा

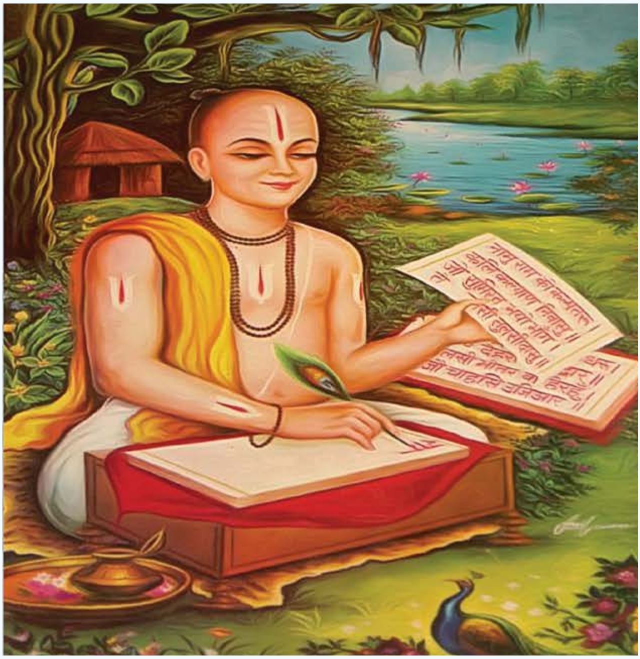

भारत की राष्ट्रीय नदी गंगा, जल ही नहीं अपितु भारतीय साहित्य की मानवीय चेतना को भी प्रवाहित करती है। ऋगवेद, महाभारत, रामायण एवं अनेक पुराणों में गंगा को पुण्य सलिला, पाप नाशनी, मोक्षदायिनी, सरित्श्रेष्ठा एवं महानदी कहा गया हैं। संस्कृत कवि जगन्नाथ राय ने गंगा की स्तुति में "श्री गंगा लहरी" नामक काव्य की रचना की।

हिन्दी में आदि महाकाव्य "पृथ्वीराज रासो", वीसलदेव रास तथा "नरपति नाल्हू" में गंगा का उल्लेख है। आदिकाल का सर्वाधिक लोकप्रिय विश्रुत ग्रंथ जगनित रचित "आल्हाखंड" में गंगा यमुना और सरस्वति का उल्लेख है। भक्ति काल में कवि सूरदास और तुलसीदास ने गंगा के महात्मय का वर्णन विस्तार से किया है। गोस्वामी तुलसीदास ने कवितावली के उत्तर कांड में श्री गंगा

महात्मय का उल्लेख तीन छंदों में किया है। इन छंदों में कवि ने गंगा दर्शन, गंगा स्नान, गंगा जल सेवन तथा गंगा तट पर बसने वालों को वर्णित किया है।

रीतिकाल में सेनापति तथा पद्माकर का गंगावर्णन श्रेष्ठ है। कवि पद्माकर ने "गंगालहरी" नामक ग्रंथ में गंगा की महिमा एंव कीर्ति का वर्णन किया है। रसखान एवं रहीम ने भी अपनी रचनाओं में गंगा का अत्यधिक सुन्दर वर्णन किया है। अन्य कवियों में भारतेन्दु हरिशचन्द, सुमित्रा नन्दन पंत और श्रीधर पाठक आदि ने भी अपने लेखन में गंगा को उद्धृत किया है। छाया वादी कवियों का प्रकृति वर्णन हिन्दी साहित्य में उल्लेखनीय है। सुमित्रा नंदन पंत ने अपनी कृति "गंगा" में गंगा का जो चित्र उकेरा है वो अत्यंत रमणीय है। उन्होंने "गंगा" नामक कविता भी लिखी है। गंगा के कई प्रतीकात्मक शब्दों का उपयोग जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुस्तक "भारत एक खोज" "डिस्कवरी ऑफ इन्डिया" में किया है। गंगा की पौराणिक कहानियों को डा० महेन्द्र मित्तल ने अपनी कृति "मां गंगा" में संजोया है।

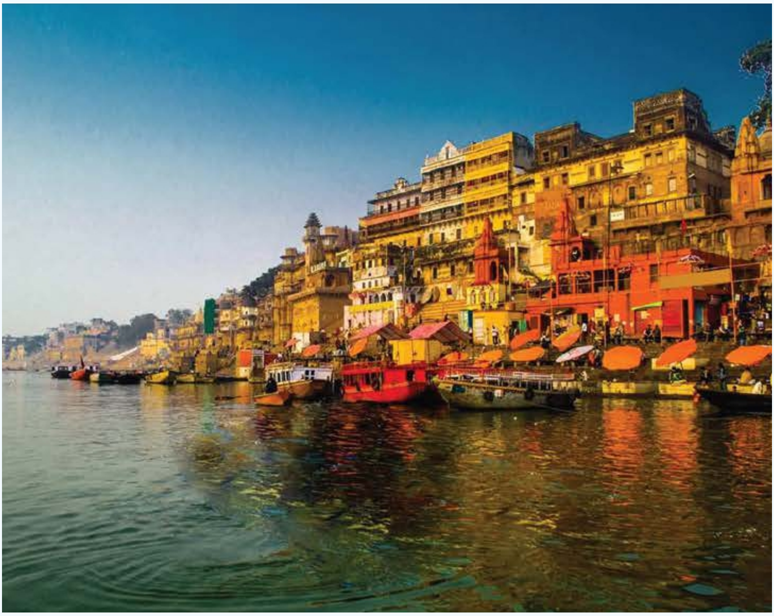

नदियों के किनारों के समृद्ध शहर साहित्य ही नहीं वरन् संगीत तथा नृत्य की विधाओं के भी गढ़ रहे हैं। सांस्कृतिक विरासत को समेटे इन्हीं शहरों से कई प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य घरानों का उदय हुआ। जिनमें से सुप्रसिद्ध तबला वादक पंडित राम सहाय बनारस घराने से सम्बंध रखते हैं। सुप्रसिद्ध बांसुरी वादक हरिप्रसाद चौरसिया की जन्मस्थली प्रयागराज है। विश्व प्रसिद्ध शहनाई वादक बिस्मिल्लाह खान की शहनाई वादन से विश्वनाथ मंदिर के कपाट खुलते थे। सुप्रसिद्ध सितार वादक पंडित रवि शंकर का जन्म वाराणसी में ही हुआ था। बनारसी संगीत घराने से सुप्रसिद्ध ठुमरी गायिका गिरिजा देवी की जन्म स्थली भी वाराणसी ही है। संगीत और नृत्य के इन महारथियों ने गंगा की शांत लहरों के संगीत को माध्यम बना कर अपनी साधना स्थली बनाया और इन शहरों का नाम विश्व पटल पर स्थापित किया।

# गंगा का धार्मिक महत्व

भारत की अनेक धार्मिक अवधारणाओं में गंगा नदी को एक देवी के रूप में दर्शाया गया है। बहुत से पवित्र तीर्थ स्थान गंगा नदी के किनारों पर अवस्थित हैं। जिनमें वाराणसी तथा हरिद्वार सबसे प्रमुख शहर हैं। गंगा नदी को भारत की पवित्रतम नदी माना गया है हिंदू धर्म की मान्यता के अनुसार गंगा में स्नान करने से मनुष्य के सारे पापों का नाश हो जाता है। मरने के बाद मोक्ष प्राप्ति के लिए मृतक की राख को गंगा में विसर्जित करने की परम्परा है। कई लोग तो गंगा के तट पर अपने प्राणों को त्यागने की इच्छा रखते हैं।

गंगा के किनारे के घाटों पर लोग पूजा अर्चना एवं ध्यान लगाते हैं। गंगा जल को पवित्र समझा जाता है तथा हिदू धर्म के सभी संस्कारों में इसका होना आवश्क माना जाता है। अनेक पर्वों एवं उत्सवों का गंगा से सीधा सम्बंध है। मकर संक्रांति, गंगा दशहरा तथा कुम्भ के समय गंगा में स्नान करने या दर्शन करना ही हिदू धर्म के अनुसार अत्यंत शुभ माना गया है।

गंगा के तट पर अनेक उत्सव एवं मेलों का आयोजन किया जाता है तथा अनेक प्रसिद्ध मंदिर भी गंगा के तट पर स्थित हैं। ये तीर्थ स्थल सम्पूर्ण भारत में सांस्कृतिक एकता के प्रतीक हैं। मेले भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। जिनमें से अधिकांश मेले नदियों के पवित्र तट पर लगते हैं। जिनमें से इस प्रकार हैं।

## गंगा सागर मेला

गंगा सागर मेले का आयोजन पश्चिम बंगाल में हुगली नदी के तट पर ठीक उसी स्थान पर किया जाता है जहां गंगा बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसी लिए इस मेले को गंगा सागर मेले के नाम से जाना जाता है। यह मेला विक्रमी संवत के अनुसार प्रति वर्ष पौष मास के अंतिम दिन लगता है। पौराणिक कथा के अनुसार इस दिन गंगा भगवान शिव की जटाओं से निकल पृथ्वी से बहते हुए हुगली के तट पर स्थित कपिल मुनी के आश्रम में पहुंची थी। ये दिन मकर संक्रांति का दिन था जिस दिन राजा सगर के पुत्रों का श्राप से मुक्ति मिली। गंगा सागर में स्नान करने के बाद श्रद्धालु भगवान सूर्य को अर्घ्य देते हैं और समुद्र देवता को नारियल और यज्ञोपवीत अर्पित करते हैं और अपनी मनोकामना पूर्ण होने के लिए प्रार्थना करते हैं।

# कुम्भ मेला

हिंदू धर्म में कुम्भ मेले को एक पर्व की तरह मनाया जाता है, जिसमें करोड़ों श्रद्धालु तथा साधु संत स्नान करते हैं। कुम्भ मेला प्रत्येक बारह वर्ष में भारत में चार स्थानों में से किसी एक प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में आयोजित किया जाता है, तथा प्रत्येक 12 वर्षो में महाकुंभ मेले का आयोजन किया जाता है। मकर संक्रांति के दिन जब सूर्य और चंद्रमा वृश्चिक राशि में और बृहस्पति मेष राशि में प्रवेश करते हैं। मकर संक्रांति में होने वाले इस योग को कुम्भ स्नान योग कहा गया है। इस दिन को विशेष मंगलकारी कहा गया है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन पृथ्वी वासियों के लिए स्वर्ग लोक के द्वार खुलते हैं। कुम्भ पर्व में स्नान करना साक्षात स्वर्ग के दर्शन करना है।

पौराणिक वर्णन में कुम्भ का पर्व समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत घट के

लिए देवासुर संग्राम से जुड़ा है। समुद्र मंथन से प्राप्त चौदह रत्नो

की प्राप्ति के बाद धन्वंतरी अमृत घट को ले कर प्रकट हुए तो अमृत को पाने की होड़ ने एक संग्राम का रूप धर लिया। ऐसे में असुरों से अमृत की रक्षा के लिए इंद्र के पुत्र जयंत घट को लेकर वहां से पलायन कर गये। देव और असुरों का ये युद्ध 12 वर्षों तक चला चंद्रमा और सूर्य ने घट की रक्षा में देवताओं का साथ दिया। जयंत द्वारा इन बारह वर्षों में बारह स्थानों पर कुम्भ को छिपाया गया जिसमें से आठ स्थान देवलोक में तथा चार स्थान पृथ्वी पर हैं। अमृत घट को छिपाते समय अमृत की कुछ बूंदें उन चार स्थानों हरिद्वार, प्रयागराज, नासिक एवं उज्जैन में कुम्भ से छलक कर गिर गईं। उन्हीं स्थानों पर 4–4 वर्षों के अन्तराल में बारह वर्ष में कुम्भ महोत्सव का आयोजन किया जाता है।

कुम्भ पर्व किसी बाजार या मेले का आयोजन नहीं है बल्कि यह ज्ञान, भक्ति, तपस्या का त्यौहार है। हर धर्म और जाति के लोग किसी ना किसी रूप में मौजूद रहते है। मेले में विभिन्न भाषायें, संस्कृतियां, कपड़े, भोजन, और रहन–सहन के तरीके देखे जा सकते हैं।

# सोनपुर पशु मेला बिहार

सोनपुर मेला बिहार के सारण और वैशाली जिले की सीमा पर गंगा और गंडक नदी के मिलन स्थल सोनपुर में हर साल कार्तिक पूर्णिमा में लगता है। यह एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला है। मेले को हरिहर क्षेत्र मेला के नाम से भी जाना जाता है जबकि स्थानीय लोग इसे छत्तर मेला के नाम से जानते हैं। विश्व प्रसिद्ध सोनपुर पशु मेला विदेशी सैलानियों के लिए खास आकर्षण है। कार्तिक पूर्णिमा से लेकर एक महिने तक चलने वाले इस मेले में घोड़े, ऊंट, कुत्ते, बकरियां एवं बिल्लियां, विभिन्न प्रकार के पक्षियों का बाजार सजता है। हर साल इस मेले में हजारों पशु पक्षी खरीदे और बेचे जाते हैं।

सोनपुर जगह से जुड़ी पौराणिक कथा के अनुसार भगवान विष्णु के दो भक्त हाथी और मगरमच्छ के रूप में धरती पर उत्पन्न हुए।

बिहार के कोनहारा घाट (हरिद्वार क्षेत्र) पर जब गज पानी पीने आया तो मगर ने गज का पांव अपने मुंह में पकड़ लिया। गज खुद को छुड़ाने के लिए लगातार लड़ता रहा। पानी में रहने के बावजूद मगर गज को पानी में नहीं खींच पाया।

यह युद्ध इतना रोमांचकारी हो गया कि सारे देवता युद्ध देखने के लिए उपस्थित हो गये। युद्ध में गज कमजोर पड़ रहा था उसने भगवान विष्णु से अपनी रक्षा के लिए गुहार लगाई भगवान विष्णु ने अपने भक्त को बचाने के लिए कार्तिक पूर्णिमा के दिन सुदर्शन चक्र चला कर दोनों को युद्ध से रोका। गज और मगर में कौन हारा और कौन जीता इस का फैसला आज तक नहीं हो पाया है, तब से इस जगह का नाम कोनहारा घाट है। उसी के नजदीक हरि (विष्णु) और हर (शिव) के मंदिर हैं इसलिए इस स्थान को हरिहर क्षेत्र भी कहते हैं।

# माघ मेला प्रयागराज

माघ मेला हिन्दू धर्म का एक पवित्र पर्व के रूप में मनाया जाता है। पौराणिक मतानुसार इस दिन ब्रहमा ने सृष्टि का सृजन पूरा कर लिया था इस लिए इसे एक उत्सव के रूप में मनाया गया। इस दिन लोग यज्ञ, धार्मिक प्रार्थनाएं, शुभ मूहुर्त में पवित्र स्नान कर ब्रहमा जी को इस सृष्टि की रचना के लिए धन्यवाद देते हैं। प्रयाग में त्रिवेणी गंगा यमुना और सरस्वती के संगम पर माघ मेले का आयोजन किया जाता है जो कि 45 दिनों तक चलता है। 45 दिनों की इस अवधि को कल्पवास के नाम से जाना जाता है। पुराणों के अनुसार ये दिन चार युगों के कुल दिनों के बराबर होते हैं। माना जाता है कि जो लोग इन दिनों में नियम और निष्ठा से कल्पवास का पालन करते हैं उन्हें कल्पवासी कहा जाता है और पूर्व जन्म में किये पाप और जीवन मृत्यु के चक्र से मोक्ष पा लेते हैं। तीन पवित्र नदियों के संगम पर स्थित होने के कारण प्रयागराज को तीर्थराज भी कहा जाता है। माघ मेले का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में भी मिलता है।

# सिहावा का श्रृंगी ऋषि मेला

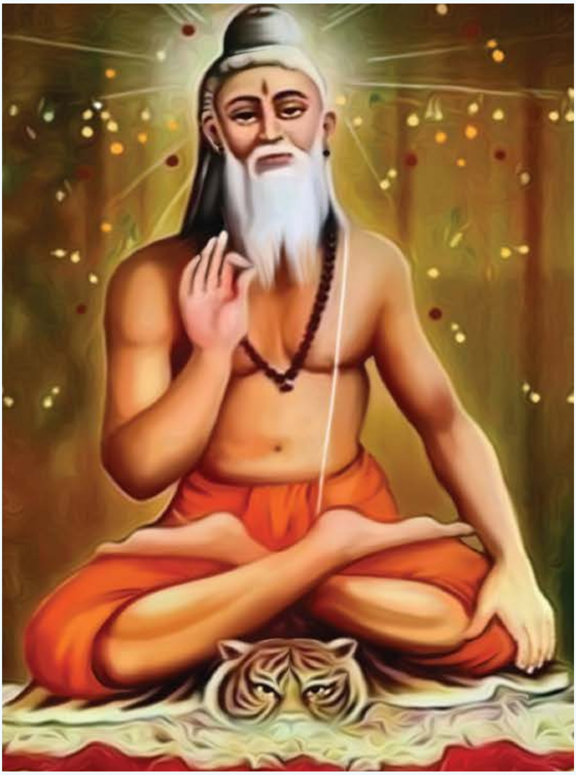

यह मेला माघी पूर्णिमा को लगता है। यह महानदी का उद्गम स्थल है। इस मेले में हजारों की संख्या में लोग पहुंचते हैं। श्रृंगी ऋषि सप्त ऋषियों में से एक हैं इन्हीं के आशीर्वाद से राजा दशरथ को पुत्रों की प्राप्ति हुई थी। श्रृंगी ऋषि आश्रम के पास एक कुंड को महानदी का उद्गम माना गया है। मान्यता है कि पर्वत शिखर को छेदती हुई महानदी 15–16 कि.मी दूर स्थित ग्राम फरसिया से महामाई धाम तक प्रवाहित होती है। ग्राम पंचायत फरसिया के जिस स्थान से महानदी वापिस पश्चिम को प्रवाहित होने लगी उस स्थान पर महामाई माता का मंदिर है जो महामाई धाम के नाम से प्रसिद्ध है।

# गंगा का आर्थिक महत्व

उत्तराखंड में हिमालय से निकल गंगा भारत के लगभग एक चौथाई क्षेत्र में प्रवाहित होती हुई बंगाल की खाड़ी में मिलती है। गंगा नदी को उत्तर भारत की अर्थव्यवस्था का मेरूदंड भी कहा गया है।

गंगा अपनी उपत्यकाओं में भारत तथा बांग्लादेश के कृषि आधारित अर्थ में भारी सहयोग तो करती ही है, साथ ही यह अपनी सहायक नदियों सहित बहुत बड़े क्षेत्र के लिए सिंचाई के स्रोत भी है। इन क्षेत्रों में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलों में मुख्यतः धान, गन्ना, दाल तिलहन, आलु एवं गेंहू हैं। गंगा के तटीय क्षेत्रों में दल–दल एवं झीलों के कारण लेग्यूम, तिल, सरसों एवं गन्ने की अच्छी फसल होती है। नदियों में मत्स्य उद्योग भी खूब फलता–फूलता है। गंगा नदी प्रणाली भारत की सबसे बड़ी नदी प्रणाली है। इसमें लगभग 375 मछली की प्रजातियां उपलब्ध हैं।

प्राकृतिक सौंदर्य के कारण गंगा का महत्व पर्यटन आधारित आय के कारण भी है। इसके तट पर ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण तथा प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर कई पर्यटन स्थल हैं जो राष्ट्रीय आय के महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं। गंगा नदी के तट पर साहसिक खेल तथा राफ्टिंग शिविरों का आयोजन किया जाता है। गंगा के तट पर बसे तीन शहर हरिद्वार, वाराणसी तथा प्रयागराज तीर्थ स्थलों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं जिसके कारण श्रद्धालुओं की एक बड़ी संख्या निरंतर बनी रहती है और धार्मिक पर्यटन में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

गंगा नदी पर निर्मित अनेक बांध भारतीय जनजीवन और अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग हैं। इनमें भीमगोडा, फरक्का, तथा टिहरी बांध प्रमुख हैं। फरक्का बांध पश्चिम बंगाल प्रांत में हुगली नदी पर बनाया गया है। इसका निर्माण कलकत्ता बंदरगाह को सिल्ट (गाद) से मुक्त करने के लिए किया गया था जो कि यहां की प्रमुख समस्या थी।

# सिंचाई

सिंचाई के लिए गंगा के पानी का उपयोग पुरातन काल से ही प्रचलित है। इस तरह की सिंचाई का उल्लेख धर्मग्रंथों तथा 2000 से भी ज्यादा साल पहले लिखे पुराणों में किया गया है। चौथी सदी में यूनान से भारत आये राजदूत मैगस्थनीज ने नदियों द्वारा सिंचाई किये जाने का उल्लेख किया है। 12वीं सदी में सिंचाई प्रणाली बहुत मजबूत थी। बाद में मुगल बादशाहों ने नहरों का निर्माण किया। ब्रिटिश शासकों ने सिंचाई प्रणाली का और अधिक विस्तार किया। उत्तर प्रदेश तथा बिहार के गंगा घाटी के क्षेत्रों में नहर सिंचाई प्रणाली से बहुत लाभ हुआ। इस विकसित सिंचाई प्रणाली के कारण कपास और तिलहन आदि नकदी फसलों की पैदावार में वृद्धि सम्भव हुई। ब्रिटिश काल में नदियों की मुख्य धाराओं से सिंचाई के लिए कई मुख्य नदियों से नहरों का सुनियोजित निर्माण किया गया। जिनमे से ऊपरी गंग नहर का निर्माण 1842 में किया गया। इस परियोजना के जनक सर पी.टी काटले थे। हरियाणा के जनपद फरीदाबाद, गुड़गांव, उत्तर प्रदेश के मथुरा एवं आगरा तथा राजस्थान के भरतपुर को सुरक्षात्मक सिंचाई व्यवस्था उपलब्ध करवाने के लिए यमुना नदी पर ओखला (दिल्ली) के पास एक वियर

का निर्माण कर आगरा नहर प्रणाली विकसित की।

गंगा यमुना दोआब के निचले भाग में ऊपरी गंगनहर प्रणाली की बेवर एवं कानपुर जल शाखाओं से सिंचाई व्यवस्थायें उपलब्ध करवाई जाती थीं। कृषि विकास के साथ–साथ ऊपरी गंगनहर में पानी की कमी रहने लगी। इस कमी को दूर करने के लिए नरौरा के पास गंगा नदी में एक वियर बना कर जिसे बाद में बैराज में परिवर्तित कर दिया गया गंगा नदी के दाहिने तट से निचली गंगनहर की अभिकल्पना 1869 में की गई और 1878 में इस नहर के द्वारा सिंचाई की जाने लगी।

उत्तर प्रदेश के शारदा घाघरा गंगा दोआब में अवस्थित जनपद नैनीताल, पीलीभीत लखीमपुर खीरी, शाहजहांपुर, हरदोई, उन्नाव, लखनऊ, बाराबंकी, रायबरेली, प्रतापगढ़, अयोध्या, सुल्तानपुर, जौनपुर, आजमगढ़, गाजीपुर एवं प्रयागराज जनपदों में सुरक्षात्मक सिंचाई व्यवस्था उपलब्ध करवाने के लिए जनपद नैनीताल की खटीमा तहसील में बनबसा बैराज का निर्माण कर इसके दाहिने तट से शारदा मुख्य नहर निकाली गई है। 1918 में इस परियोजना का प्रारम्भ किया गया।

## इसके अतिरिक्त मुख्य सिंचाई परियोजनाओं

- बेतवा हर प्रणाली
- धसान नहर प्रणाली
- केन नहर प्रणाली
- पश्चिमी गंडक प्रणाली
- शारदा सहायक परियोजना
- मध्य गंगा परियोजना
- पूर्वी गंगा नहर परियोजना
- राजघाट नहर परियोजना
- सरयू नहर परियोजना
- बाणसागर परियोजना
- क्नहर परियोजना

# गंगा की जैवविविधता

गंगा नदी एशिया की सबसे बड़ी नदियों में से एक है। जो कि उत्तराखण्ड के गौमुख से लेकर बंगाल की खाड़ी तक 2525 कि.मी तक का सफर तय करती है। और अपने इस सफर के दौरान वो भारत के तकरीबन 26 प्रतिशत भूभाग को कवर करती है।

भारत की लगभग 43 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से किसी ना किसी प्रकार इस महान नदी पर निर्भर करती है। गंगा नदी को विभिन्न प्रकार की दुर्लभ प्रजातियों का घर माना जाता है। इसमे

गांगेय डॉल्फिन, घड़ियाल, उदबिलाव, दलदलीय मगरमच्छ, एस्टुरीन मगरमच्छ और कछुए शामिल हैं। इसके अतिरिक्त गंगा में मछलियों की लगभग 378 प्रजाति पाई जाती हैं।

गंगा मानव जीवन के लिए जीवन दायिनी तो है ही, ये असंख्य जीवों का वास स्थल भी है। जो कि गंगा को स्वच्छ रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा किये गये सर्वेक्षण के अनुसार गंगा नदी के 49 प्रतिशत हिस्से में जैवविविधता का स्तर काफी

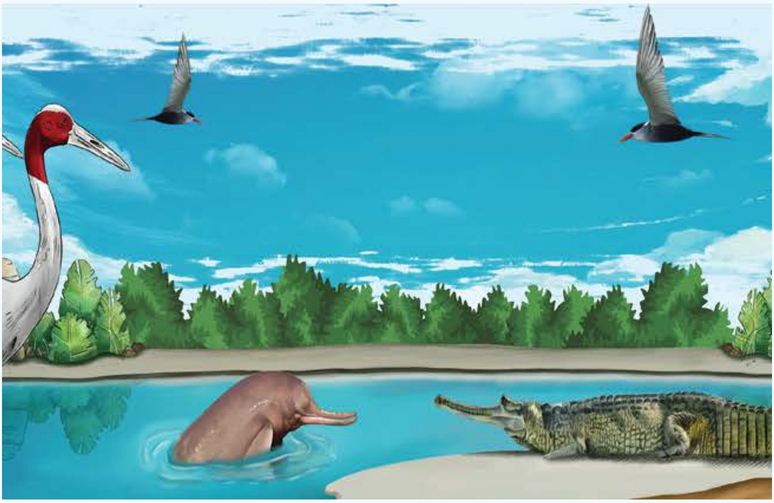

उच्च है। उच्च जैवविविधता वाले क्षेत्रों में से लगभग 10 प्रतिशत राष्ट्रीय उद्यानों, अभ्यारण्यों के आसपास स्थित है।

गंगा नदी में वनस्पतियों तथा जीवों की लगभग 2000 प्रजातियां पाई जाती हैं। इन प्रजातियों में से कुछ प्रजातियां क्षेत्र विशेष में पाई जाती हैं। ये विश्व के किसी और हिस्से में नहीं पाई जाती। गांगेय डॉल्फिन, घड़ियाल और मुलायम आवरण वाले कछुए कुछ विशिष्ट उदाहरण हैं। पॉलीकीट, सीप और घोंघों की कई प्रजातियां समुद्र और गंगा दोनों में पाई जाती हैं। हिलसा मछली रहती तो समुद्र में है लेकिन प्रजनन के लिए गंगा में आती है और प्रजनन के बाद अपने बच्चों के साथ समुद्र में वापस चली जाती हैं। इसी प्रकार झींगा मछली की कुछ प्रजातियां प्रजनन के लिए गंगा से समुद्र में जाती हैं। और प्रजनन के बाद अपने बच्चों के साथ नदी में वापस आ जाती हैं। गंगा में कई प्रकार के जीव जन्तु पाये जाते हैं जो स्थानीय समुदाय की आजीविका के साधन होने के साथ गंगा के पारिस्थितिकी तंत्र के लिए भी आवश्यक हैं।

गंगा बेसिन में भारत का लगभग 26 प्रतिशत भूभाग है, जिसमें भारत की लगभग 43 प्रतिशत मानव आबादी बसी हुई है। यह विश्व का अधिकतम आबादी घनत्व वाला क्षेत्र है। इसके किनारे बड़े–बड़े नगर बसे हैं। इन नगरों में अनेक कल–कारखाने हैं। लोगों का मलजल, कल–कारखानों के अपशिष्ट बिना शोधन के गंगा में बहाये जाते हैं। गंगा की सहायक

नदियों पर बनाये जा रहे बांध इसकी जैवविधता को नुकसान पहुंचाने वाले कारक हैं। जैवविविधता के ह्रास के दो मुख्य कारण जलीय जीवों का अवैध शिकार एवं वास स्थानों का विनाश हैं। जिससे कि अनेकों जलीय जीव या तो विलुप्त हो चुके हैं या विलुप्ति की कगार पर हैं। फसलों में इस्तेमाल होने वाले कीटनाशक भी जैवविविधता को नुकसान पहुंचाते हैं। जल प्रवाह में कमी तथा अवैध निर्माण इनके वासस्थानों को नुकसान पहुंचाने वाले कारकों में से प्रमुख हैं।

पवित्र पावन गंगा जो भारत के 11 राज्यों में 40 प्रतिशत आबादी को पेयजल उपलब्ध करवाती है आज यह दुनिया की छठी सबसे प्रदूषित नदियों में से एक है। दिन–प्रतिदिन गंगा का पानी काला पड़ता जा रहा है। गंगा में प्रदूषण का मुख्य कारण गंगा के किनारों पर रहने वाले लोग गंगा के पानी को नहाने, कपड़े धोने, सार्वजनिक शौच के लिए इस्तेमाल करते हैं। औद्योगिक अपशिष्ट गंगा में प्रदूषण बढ़ाने में सबसे अहम् भूमिका निभा रहे हैं। सबसे अधिक चिन्ता का विषय यह है कि गंगा में प्रतिदिन 2 करोड़ 90 लाख लीटर प्रदूषित कचरा गिर रहा है। विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार यू.पी में 12 प्रकार की बीमारियां गंगा के प्रदूषण के कारण हैं। ग्लोबलवॉर्मिंग के कारण ग्लेशियरों की बर्फ तेजी से पिघलती जा रही है, जिसकी वजह से गंगा में प्रदूषण तो बढ़ ही रहा है साथ ही इसके जल प्रवाह में भी कमी आ रही है। यदि यही स्थिति रही

तो गंगा में पानी की मात्रा कम और प्रदूषण की मात्रा बढ़ जायेगी। यह एक अत्यंत चिंता का विषय है कि गंगा का पानी ना तो पीने लायक रह गया है ना ही नहाने लायक और यहां तक कि सिंचाई के लायक भी नहीं रह गया है। गंगा जल में पाया जाने वाला वाला बैक्टीरियोफेज नामक विषाणु जो कि अन्य हानिकारक जीवाणुओं को समाप्त कर गंगा के पानी को शुद्ध बनाये रखता था अब उसकी संख्या में भी कमी आ गई है।

गंगा में प्रदूषण के कारणों पर यदि हम गौर करें तो हमें अधिकतर कारक मानवजनित ही नजर आयेंगे। प्रदूषण के निदान के लिए एक एकीकृत सोच से काम करने की आवश्यकता है। सरकार तो अपने स्तर से काम कर ही रही है लेकिन ये भी समझ में आने लगा है कि बिना सामुदायिक भागीदारी के ये काम सफल हो ही नहीं सकता।

इसके लिए सर्वप्रथम आवश्यकता है जागरूकता की। हमें उन सभी बातों पर गौर करना होगा कि हमारे द्वारा की जाने वाली कौन सी

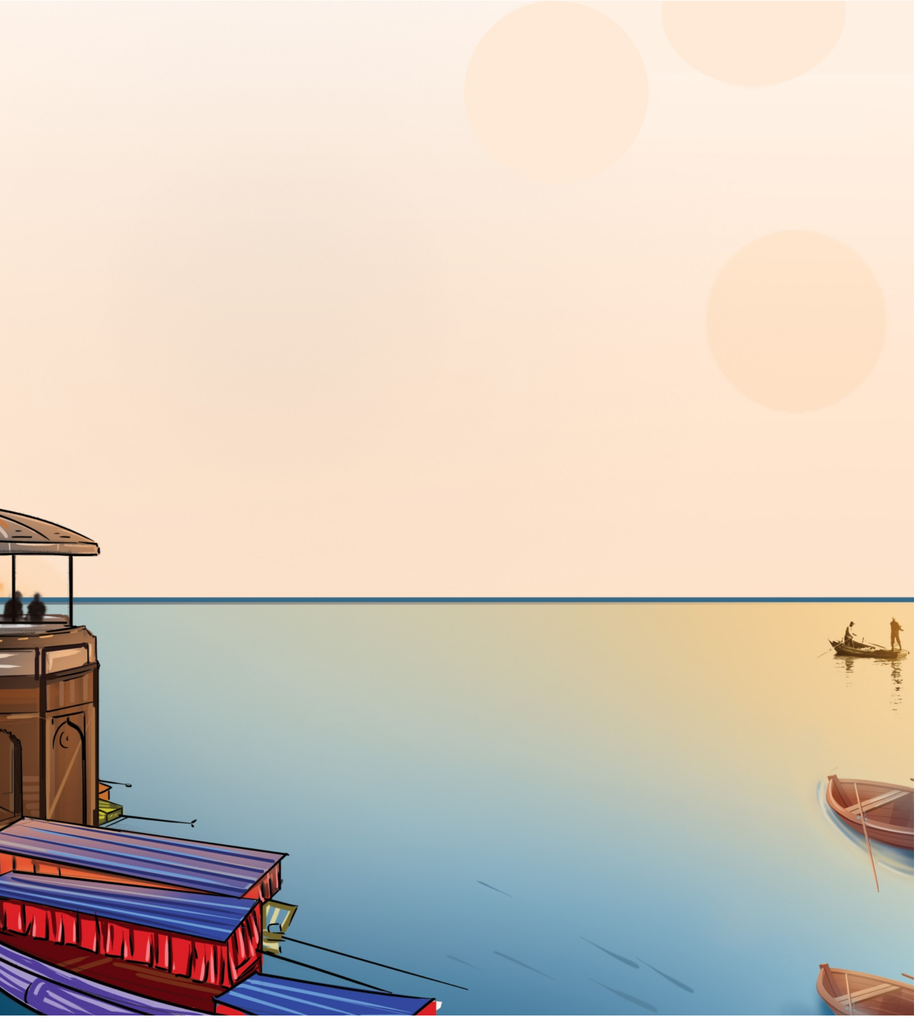

गतिविधियां ऐसी हैं जो प्रदूषण बढ़ाने में सहायक हैं। नदियों और इनमें रहने वाले जलीय जीवों को हम जाने अनजाने नुकसान पहुंचा रहे हैं। हमारी परंपरायें और धार्मिक अनुष्ठान नदियों को नुकसान पहुंचाने वाले कारकों में सबसे प्रमुख हैं जिनमें पूजा, वृत और अनुष्ठानों के पश्चात नदियों में विसर्जित की गई पूजन हवन सामाग्री, मूर्तिया, फल–फूल, पॉलीथीन, कपड़े और शवदाह होने के बाद शेष बचे अवशेष, राख, मुंडन संस्कार के उपरांत बहाये गये बाल, कृषि में उपयोग होने वाले हानिकारक कीटनाशक, रासायनिक खाद ये सब भी नदियों के प्रदूषण बढ़ाने में सहायक हैं। अगर हमने अपनी इन आदतों में परिवर्तन नहीं लाया तो वो दिन दूर नहीं जब नदियां विलुप्त हो जायेंगी और संसार एक कूड़े के ढेर में परिवर्तित हो जायेगा।

तो प्यारे बाल गंगा प्रहरी दोस्तों हमें अपनी रोजमर्रा की आदतों में छोटे से परिवर्तन ला कर गंगा और प्रकृति को प्रदूषण से बचाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना होगा। हमारे द्वारा किये गये यह परिवर्तन पर्यावरण, नदी और जलीय जीव संरक्षण की दिशा में एक ऐसा कदम होगा, जो हमारे बाद आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ हवा, शुद्ध पानी और एक सहज वातारण देगा।

## क्या आप जानते हैं ?

- गंगा उत्तराखंड के गौमुख ग्लेशियर से निकलती हैं।
- गौमुख ग्लेशियर से निकलने वाली गंगा भागीरथी के नाम से जानी जाती है।
- उत्तराखंड के टिहरी जिले में भगीरथी भिलंगना के साथ संगम करती है।
- बद्रीनाथ के सतोपंथ ग्लेशियर आने वाली अलकनंदा, अनेक छोटी बड़ी नदियों के साथ संगम करके देवप्रयाग में भगीरथी के साथ संगम के बाद ही गंगा बनती है।
- विष्णुप्रयाग में विष्णुगंगा और धौली गंगा मिलकर अलकनंदा नदी बनाती है इसके बाद नंद प्रयाग में नंदाकिनी, कर्णप्रयाग में पिण्डर तथा रुद्रप्रयाग में मंदाकिनी, अलकनंदा से आकर मिलती हैं।

# क्या आप जानते हैं ?

• गंगा की प्रमुख सहायक नदियां यमुना, रामगंगा, कोसी, घाघरा, गंडक, ताप्ती, महानंदा और काक्षी हैं।

• प्रयागराज तीन नदियों गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम स्थल पर बसा है।

• वरूणा और असी गंगा के बीच में बसा होने के कारण बनारस का नाम वाराणसी पड़ा।

• पचिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के गिरिया नामक स्थान में गंगा दो धाराओं में बहती है एक धारा जिसे पद्मा के नाम से जाना जाता है, जो बांग्लादेश की ओर चली जाती है और दूसरी धारा पश्चिम बंगाल के हुगली शहर की ओर बहती है जिसे हुगली के नाम से जाना जाता है।

• बंगाल की खाड़ी में गंगा ब्रह्मपुत्र और मेघना नदियों के डेल्टा पर स्थित सुंदरबन विश्व का सबसे बड़ा मैंग्रोव वन क्षेत्र है।

• सुंदरबन का 40 प्रतिशत भाग भारत में और बाकी बांग्लादेश में स्थित है।

• सुंदरबन को वर्ष 1987 में भारत वाले क्षेत्र को और 1997 में बांग्लादेश वाले क्षेत्र को यूनैस्को ने राष्ट्रीय धरोहर घोषित किया।

# क्या आप जानते हैं ?

• गंगा नदी उत्तराखंड से बंगाल की खाड़ी तक लगभग 2525 कि.मी का सफर तय करती है।

• गंगा भारत के 5 राज्यों उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखंड तथा पश्चिम बंगाल से होकर गुजरती है।

• 4 नवम्बर 2008 को गंगा को राष्ट्रीय नदी घोषित किया गया ।

• गंगा भारत के 861404 वर्ग.कि.मी. के भू भाग को आच्छादित करती है।

• गंगा 11 भारतीय राज्यों के 50 करोड़ लोगों को जो कि भारत की कुल जनसंख्या का 40 प्रतिशत हिस्सा हैं,पेयजल उपलब्ध करवाती है।

• भारत की 41 प्रतिशत भूमि गंगा द्वारा सिंचित की जाती है।

• गंगा में 492 छोटी–बड़ी सिंचाई की योजनायें हैं।

• गंगा में लगभग 795 विद्युत परियोजनाएं हैं।

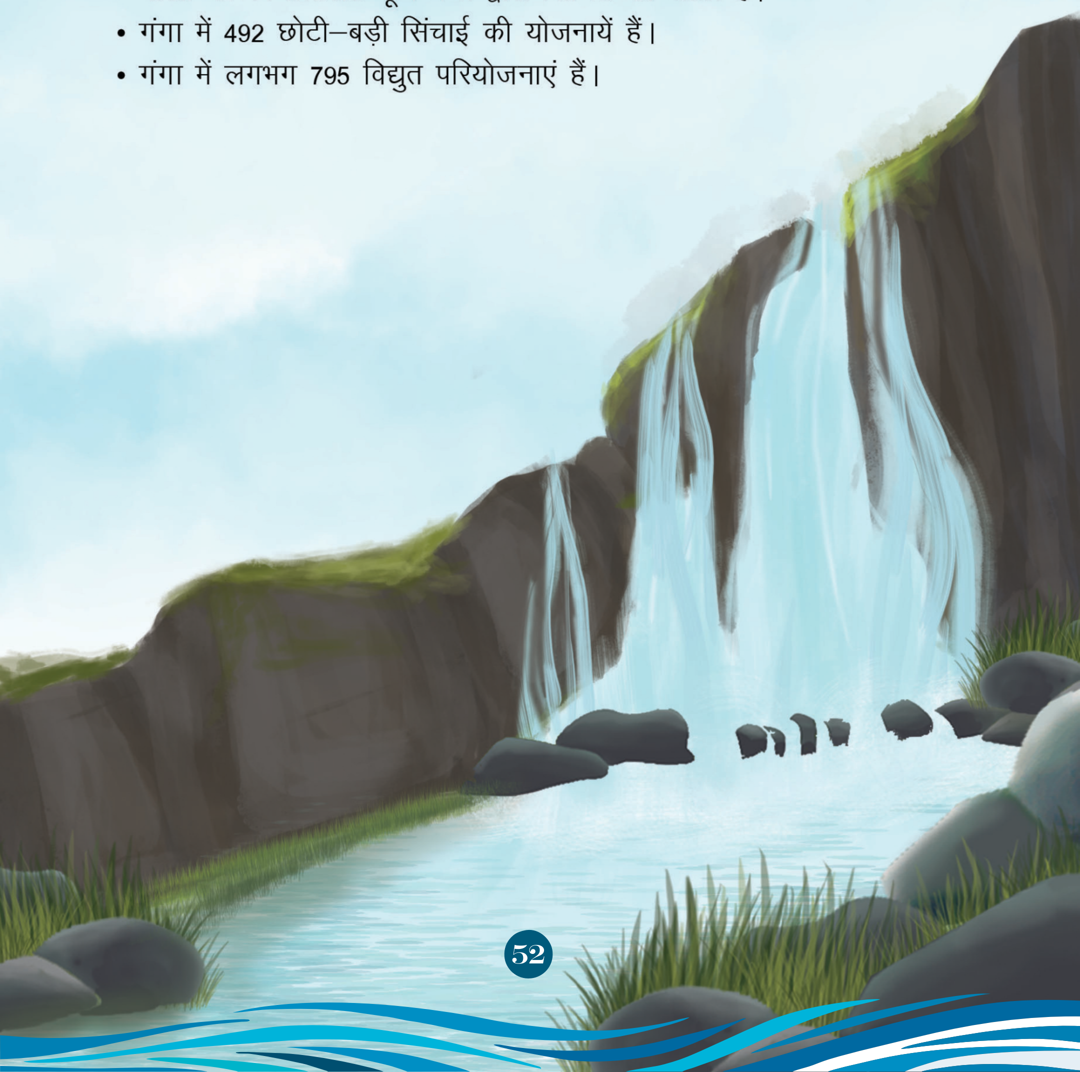

# क्या आप जानते हैं ?

• गंगा नदी में 5 प्रजाति के स्तनधारी जलीय जीव पाये जाते हैं। 2 प्रकार की डॉल्फिन तथा 3 प्रजाति के उद्बिलाव।

• गंगा नदी में लगभग लगभग 117 प्रकार के जलीय पक्षी पाये जाते हैं।

• गंगा नदी में लगभग 27 प्रजाति के सरीसृप पाये जाते हैं।

• गंगा नदी में लगभग 378 प्रजाति की मछलियां पाई जाती हैं।

• गंगा नदी में लगभग 289 प्रजाति के पौधे पाये जाते है। जिनमें से 56: औषधीय पौधे, 10: झाड़ियां 21: पेड़ों की प्रजाति 6:लतायें 7: घास की प्रजाति पाई जाती है।

• गंगा नदी के पानी में बैक्टीरियोफेज वायरस पाया जाता है जो कि पानी से हानिकारक विषाणुओं को समाप्त कर देता है।

**NMCG**
National Mission for Clean Ganga,
Department of Water Resources,
River Development & Ganga
Rejuvenation,Ministry of Jal Shakti,
Major Dhyan Chand Stadium,
India Gate, New Delhi - 110001

**Wildlife Institute of India**
Chandrabani,
Dehradun-248001,
Uttarakhand
t.:+91135 2640114-15,
+91135 2646100,
f.:+91135 2640117

**GACMC**
Ganga Aqualife
Conservation
Monitoring Centre
Wildlife Institute of
India, Dehradun
nmcg@wii.gov.in

www.wii.gov.in/national_mission_for_clean_ganga